

करना होगा जैव विविधता का संरक्षण

जागरण संवाददाता, पटना : कृषि और बागवानी के क्षेत्र में लुप्त हो रही जैव विविधता का संरक्षण करना होगा। बिहार राज्य जैव विविधता पर्षद जैव विविधता के संरक्षण के लिए कार्य योजना बना रहा है। इसी उद्देश्य से कृषि एवं बागवानी क्षेत्र में बिहार राज्य जैव विविधता रणनीति एवं कार्ययोजना पर कार्यशाला का आयोजन बुधवार को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्वी अनुसंधान परिसर मुख्यालय में किया गया।

इसमें कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने कहा कि राज्य में कृषि से जुड़ी चुनौतियों की पहचान करना आवश्यक है। इसके समाधान के लिए फसल विविधीकरण को बढ़ावा देना चाहिए। कतरनी, मर्चा, सोनाचूर, गोविंद भोग (धान), चिनिया व मालभोग (केला), शाही लीची, दूधिया मालदा व दीघा (आम) तथा जामुन जैसे स्थानीय फसलों एवं फलों के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि शोधकर्ताओं को किसानों की आवश्यकताओं के अनुसार उत्तम किस्मों के बीजों का विकास करना चाहिए, ताकि टिकाऊ



कार्यशाला में उपस्थित कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल व अन्य • जागरण

कृषि का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

बिहार राज्य जैव विविधता पर्षद के अध्यक्ष भरत ज्योति जैव विविधता रणनीति व कार्य योजना के सूत्रण पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के निदेशक डा. विकास दास ने कृषि जैव विविधता के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की भूमिका को रेखांकित किया। आइसीएआर पूर्वी क्षेत्र के निदेशक डा. अनुप दास ने कहा

कि हमारा संस्थान बिहार राज्य जैव विविधता पर्षद के साथ मिलकर जैव विविधता के संरक्षण एवं सुधार के लिए सतत और समुचित उपयोग के लिए कार्य करेगा। आइसीएआर पूर्वी के कार्यवाहक निदेशक डा. अशुतोष उपाध्याय, राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, के प्रधान वैज्ञानिक डा. संजय सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक तन्मय कुमार कोले, डा. कुमारी शुभा समेत कार्यक्रम में 75 अधिकारियों ने भाग लिया।